यदि पैसा ही सबकुछ है, तो फिर रणवीर की रामायण का जवाब नहीं!



रामायण केवल एक कहानी नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आस्था, संस्कृति, संस्कार और जीवन मूल्यों की आधारशिला है। यह वह महाकाव्य है, जिसके पात्र हमारे लिए केवल पर्दे पर दिखाई देने वाले किरदार नहीं, बल्कि आदर्श, प्रेरणा और जीवन जीने की दिशा देने वाले प्रतीक हैं। इसलिए जब रामायण जैसे विषय पर फिल्म बनाई जाती है, तो उससे दर्शकों की अपेक्षा केवल भव्य दृश्यों, महंगे सेट, आधुनिक तकनीक और करोड़ों के बजट तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसकी सबसे बड़ी अपेक्षा होती है कि वह रामायण की मूल भावना और पात्रों की मर्यादा को आत्मसात करे। रामानंद सागर की रामायण को याद कीजिए। सीमित तकनीकी संसाधनों और साधारण दृश्यांकन के बावजूद उसने जिस प्रकार हर घर में राम के प्रति श्रद्धा और आस्था का वातावरण बनाया, वह भारतीय टेलीविजन के इतिहास में एक मिसाल है। उस रामायण को देखते हुए पूरा परिवार एक साथ बैठता था। पात्रों का अभिनय, संवाद, भावनाएं और उनकी प्रस्तुति इतनी प्रभावशाली थी कि दर्शक कलाकारों में नहीं, बल्कि अपने आराध्य के स्वरूप में उन्हें देखने लगे थे। यही किसी धार्मिक रचना की वास्तविक सफलता थी। इसके विपरीत, आज करोड़ों रुपये खर्च करके बनाई गई नई रामायण को लेकर कई सवाल खड़े होते हैं। यदि उपलब्ध दृश्यों और प्रस्तुत किए गए प्रसंगों को ही आधार मानें, तो कहीं लक्ष्मण जैसे गंभीर और तेजस्वी पात्र की प्रस्तुति में अनावश्यक हल्कापन दिखाई देता है, तो कहीं राम, लक्ष्मण और सीता जैसे मर्यादित चरित्रों को ऐसी परिस्थितियों में दिखाया जाता है, जो उनकी पारंपरिक छवि और चरित्र की गरिमा से मेल नहीं खातीं। कुछ दृश्यों में सीता को आधुनिक महिला सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश दिखाई देती है, जहां वे स्वयं राक्षसों से युद्ध करती नजर आती हैं। नारी सशक्तिकरण निश्चित रूप से महत्वपूर्ण विचार है, लेकिन क्या किसी पात्र को सशक्त दिखाने के लिए उसके मूल चरित्र और प्रसंग की आत्मा को बदलना उचित है? लक्ष्मण द्वारा राजा दशरथ के प्रति कहे गए कथित संवाद भी गंभीर प्रश्न खड़े करते हैं। रामायण में लक्ष्मण का चरित्र अपने बड़े भाई राम के प्रति समर्पण, त्याग, शौर्य और अनुशासन का प्रतीक है। ऐसे में उनके संवादों में अनावश्यक कटुता या असंगत व्यवहार दिखाना केवल संवादों में बदलाव नहीं, बल्कि चरित्र की मूल भावना को प्रभावित करना है। सीता हरण जैसे अत्यंत संवेदनशील प्रसंग को ही देख लीजिए। यह प्रसंग केवल एक अपहरण की घटना नहीं, बल्कि रामायण की कथा का निर्णायक मोड़ है। इसमें सीता की विवशता, भय, पीड़ा और रावण के अहंकार का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि किसी प्रस्तुति में सीता की भाव-भंगिमाओं से वह पीड़ा और असहायता ही गायब हो जाए, तो दृश्य का मूल भाव ही समाप्त हो जाता है। केवल किसी पात्र को भव्य दिखा देना और उसके चरित्र की आत्मा को पर्दे पर उतार देना, दोनों अलग-अलग बातें हैं। इस संदर्भ में एक और महत्वपूर्ण बात समझने की आवश्यकता है। सिनेमा को कलात्मक स्वतंत्रता अवश्य मिलनी चाहिए। रचनात्मक प्रयोग भी होने चाहिए और समय के साथ प्रस्तुति के तरीके भी बदलने चाहिए। लेकिन कलात्मक स्वतंत्रता का अर्थ यह नहीं हो सकता कि दर्शकों की आस्था और सांस्कृतिक विरासत को व्यावसायिक लाभ के लिए प्रयोग की वस्तु बना दिया जाए। रामायण कोई काल्पनिक सुपरहीरो कहानी नहीं है, जिसे दर्शकों की पसंद के अनुसार मनमाने ढंग से बदला जा सके। इसके साथ करोड़ों लोगों की भावनाएं और पीढ़ियों से चली आ रही सांस्कृतिक स्मृतियां जुड़ी हुई हैं।

पहले भी कुछ फिल्मों में धार्मिक प्रतीकों और देवी-देवताओं को हास्य या व्यंग्य का माध्यम बनाकर प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए, फिल्म %पीके% में भगवान शिव के स्वरूप को भागते और छिपते हुए दिखाने वाले दृश्य ने भी व्यापक बहस को जन्म दिया था। किसी सामाजिक कुरीति, पाखंड या अंधविश्वास पर व्यंग्य करना गलत नहीं है, लेकिन उसके लिए धार्मिक प्रतीकों की गरिमा और आस्था का ध्यान रखना भी उतना ही आवश्यक है। वह भी तब जब आज की युवा पीढ़ी पहले ही सोशल मीडिया, त्वरित मनोरंजन और अधूरी जानकारियों के बीच अपनी सांस्कृतिक पहचान और मूल्यों को समझने की चुनौती से गुजर रही है। ऐसे में रामायण जैसे महाकाव्य पर बनने वाली फिल्मों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि राम की महानता केवल उनके शौर्य में नहीं, बल्कि उनके संयम, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा और मर्यादा में है। सीता की शक्ति केवल युद्ध करने में नहीं, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में उनके आत्मसम्मान, धैर्य और दृढ़ संकल्प में भी है। लक्ष्मण की वीरता केवल शस्त्र चलाने में नहीं, बल्कि उनके समर्पण और भाई के प्रति अटूट निष्ठा में भी है।

अंततः सवाल यह नहीं है कि फिल्म का बजट कितना है, तकनीक कितनी आधुनिक है या बॉक्स ऑफिस पर वह कितनी कमाई कर रही है। सवाल यह है कि क्या ऐसी फिल्में हमारी आने वाली पीढ़ी को रामायण के मूल संदेश के और करीब ले जाएंगी या केवल मनोरंजन और व्यावसायिक सफलता तक सीमित रह जाएंगी? धर्म और आस्था से जुड़े विषयों पर फिल्म बनाना केवल एक व्यावसायिक अवसर नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक जिम्मेदारी भी है। यदि उद्देश्य केवल पैसा कमाना है, तो शायद भव्यता, तकनीक और प्रचार के आधार पर कोई भी फिल्म सफल हो सकती है; लेकिन यदि उद्देश्य रामायण को जीवंत करना है, तो उसके लिए केवल पैसा नहीं, बल्कि संवेदनशीलता, श्रद्धा और पात्रों की आत्मा को समझने की आवश्यकता है। क्योंकि रामायण की असली सफलता करोड़ों की कमाई में नहीं, बल्कि उस संस्कार में है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचता है।

नीरज शर्मा (योर्स थिंकर), इंदौर



इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल का भव्य शुभारंभ

कुआँ प्यासों के पास नहीं जाता, प्यासे कुएं के पास आते हैं

इंदौर। साहित्य, कला और संस्कृति के विविध रंगों के साथ इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल के 12वें संस्करण का शुक्रवार को डेली कॉलेज में शुभारंभ हुआ। तीन दिवसीय साहित्यिक उत्सव के पहले दिन लोक संस्कृति, लेखन, हिन्दी भाषा के इतिहास और नई पीढ़ी की रचनात्मकता पर केंद्रित सत्र आयोजित किए गए।



उद्घाटन समारोह के बाद लोक गायिका, अभिनेत्री और लेखिका इला अरुण के साथ 'भारत की माटी की ठेठ उसक' विषय पर विशेष संवाद हुआ। इस दौरान उन्होंने मालवा की मिट्टी की साहित्यिक और सांस्कृतिक समृद्धि की सराहना करते हुए कहा कि, इंदौर जैसे शहर में साहित्य का इतना सुंदर आयोजन होना गौरव की बात है। गायक सुनील लोधी ने भजनों की प्रस्तुति देकर माहौल को भक्तिमय बनाया, वहीं बाल कलाकार विहान शेडगे के साथ 'हनुमान अंश' फिल्म से जुड़े अनुभवों पर भी संवाद हुआ।

इला अरुण ने कहा, ÷कुआँ प्यासों के पास नहीं जाता, प्यासे कुएं के पास आते हैं। हम सभी में सीखने, नया सुनने और नई ऊर्जा पाने की जो इच्छा है, वही हमें यहां खींचकर लेकर आती है। मालवा की मिट्टी ने दुनिया को कई रत्न दिए हैं। चाहे साहित्य हो, कला हो, मनोरंजन हो या कोई दूसरी विधा, इस क्षेत्र ने हर क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है।

ऐसी समृद्ध मिट्टी पर अगर इंदौर लिटरेचर फेस्टिवल जैसा आयोजन हो रहा है, तो यह गौरवान्वित करने वाला क्षण है। आप सभी बधाई के पात्र हैं कि, इतने सुंदर और बेहतरीन आयोजन कर रहे हैं। हम भी अपने आपको खुशनसीब मानते हैं कि यहाँ मौजूद हैं और आप लोगों ने इतना प्यारा फेस्टिवल सजाया है।

उत्सव का शुभारंभ शाम 4 बजे डेली कॉलेज के धीरूभाई अंबानी सभागृह में हुआ। इसके बाद शाम 4÷45 बजे इला अरुण के साथ 'भारत की माटी की ठेठ उसक' सत्र आयोजित किया गया। इसमें भारतीय लोक संस्कृति, परंपराओं और अपनी कला यात्रा से जुड़े अनुभव साझा किए गए। संवाद के दौरान देश की सांस्कृतिक विविधता और लोक अभिव्यक्तियों के महत्व पर चर्चा हुई।

इसके बाद ÒThe Debutant NovelistÓ सत्र में लेखक अभिषेक छाजलानी और आद्यलक्ष्मी ने अपने लेखन के अनुभव साझा किए। इसमें नए लेखकों के सामने आने वाली चुनौतियों, रचनात्मक प्रक्रिया और लेखन की दुनिया में अपनी पहचान बनाने के सफर पर चर्चा हुई।

'हनुमान अंश' फिल्म से जुड़े बाल कलाकार विहान शेडगे और गायक सुनील लोधी विशेष सत्र में शामिल हुए।

हिन्दी को समर्पित 116 साल'

दिन का एक सत्र हिन्दी को समर्पित 116 साल' महत्वपूर्ण रहा। इसमें राकेश शर्मा, अरविंद जावलेकर, डॉ. पुष्पेंद्र दुबे, डॉ. हेराम वाजपेयी और पद्मा सिंह ने चर्चा में भाग लिया।

तृप्ति मिश्रा एवं प्रवीण सत्यप्रकाश ने सत्र का संचालन किया। आयोजन के मुख्य प्रायोजक माइक्रो मिट्टी हैं, जबकि डेली कॉलेज वेन्यू पार्टनर है।

अच्छा सुनकार ही अच्छा फ़नकार बनता है

इंदौर। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के युवा उत्सव के अंतर्गत शुक्रवार को विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र विभाग में अंतरमहाविद्यालयीन वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। रोजगारपरक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण है या मूल्यपरक शिक्षा विषय पर आयोजित इस प्रतियोगिता में शहर के 21 महाविद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए विषय के पक्ष एवं विपक्ष में प्रभावशाली तर्क प्रस्तुत किए।



प्रतियोगिता का आयोजन माता जीजाबाई शासकीय स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय एवं ढूण्ढू कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज के संयुक्त तत्वाधान में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय कवि एवं शिक्षाविद् प्रो. डॉ. राजीव शर्मा, अध्यक्ष वरिष्ठ शिक्षाविद् एवं साहित्यकार डॉ. पुरुषोत्तम दुबे तथा विशिष्ट अतिथि स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स की डायरेक्टर डॉ. रेखा आचार्य उपस्थित रहीं।मुख्य अतिथि अंतर्राष्ट्रीय कवि प्रो. डॉ. राजीव शर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक प्रभावी वक्ता बनने के लिए अच्छा श्रोता होना आवश्यक है। अच्छा सुनकार ही अच्छा फ़नकार बनता है. उन्होंने संवाद, तर्क एवं अभिव्यक्ति की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को विचारों की स्पष्टता और आत्मविश्वास के साथ अपनी बात रखने के लिए प्रेरित किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में डॉ. पुरुषोत्तम दुबे ने भी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया। विशिष्ट अतिथि डॉ. रेखा आचार्य ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य मानवीय चेतना का विकास करना तथा व्यक्ति को अपनी क्षमताओं का सकारात्मक उपयोग करने योग्य बनाना है. ढूण्ढू कॉमर्स एंड साइंस कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजीव कुमार झालानी ने प्रतिभागियों को प्रतियोगिता के नियमों एवं प्रक्रिया से अवगत कराया।वाद-विवाद के दौरान रोजगारपरक शिक्षा के पक्ष में प्रतिभागियों ने तर्क दिया कि वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक दौर में कौशल आधारित एवं व्यावहारिक शिक्षा युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ रोजगार के विविध अवसर उपलब्ध कराती है। वहीं, मूल्यपरक शिक्षा के पक्ष में विद्यार्थियों ने कहा कि शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि अच्छे इंसान एवं जिम्मेदार नागरिक के निर्माण का आधार भी है।

जब कर्मों का प्रहार होता है तो सारे ऐश्वर्य नष्ट हो जाएँगे

इंदौर । हमें चिन्तन करना चाहिए कि आखिर हम किस अहंकार और अकड़ में जी रहे हैं। हम क्यों ऐसा मानते हैं कि हमारे जैसा कोई और नहीं है। याद रखें कि व्यक्ति पर जब कर्मों का प्रहार होता है तो राजा को रंक बनते देर नहीं लगती। कर्मों की प्रबलता के सामने संसार की सारी सम्पत्ति, सत्ता, ऐश्वर्य, वैभव और अहंकार क्षणभर में समाप्त हो सकते हैं इसलिए जीवन में हमेशा धर्म-ध्यान, तप-त्याग और प्रभु के प्रति समर्पण भाव को निरंतर मजबूत बनाने का पुरुषार्थ करते रहना चाहिए।

ये दिव्य विचार हैं शासन दीपक प.पू. आदित्य मुनि म.सा. के, जो उन्होंने जानकी नगर स्थित स्थानक पर आयोजित धर्मसभा में व्यक्त किए। साधुमार्गी जैन समता संघ के अध्यक्ष पारस बोहरा एवं मीडिया प्रभारी मनीष बोहरा ने बताया कि सभा को प.पू. रामदर्श मुनि म.सा. ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि मन के अनुकूल हालातों के प्रति राग और प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति द्वेष का भाव ही रागद्वेष है। संसार में यदि कोई शक्ति हमें भवसागर से पार लगा सकती है तो वह है तीर्थंकर भवन की वाणी और उसके प्रति हमारी अटूट श्रद्धा, विश्वास और समर्पण की भावना।

सवा लाख पुच्छीसुणम मंगल आराधना प्रारम्भ - इंदौर साधुमार्गी जैन समता संघ के अध्यक्ष पारस बोहरा एवं मीडिया प्रभारी मनीष बोहरा ने बताया कि आचार्यश्री रामलाल म.सा. ने भगवान महावीर स्वामी के दीक्षा कल्याणक दिवस 3 दिसम्बर को संयम दिवस के रूप में मनाने का आह्वान किया है। यह महाअनुष्ठान आज से प्रारम्भ होकर 6 दिसम्बर तक चलेगा जिसके तहत एक लाख 25 हजार मंगल आराधना का शुभ अवसर सभी साधकों को उपलब्ध रहेगा।

लेखक कुमार सिद्धार्थ की पुस्तक प्रकृति का भविष्य, भविष्य का समाज का लोकार्पण कल

पानी वाले बाबा के नाम से प्रख्यात पर्यावरणविद राजेंद्र सिंह सहित अनेक विशेषज्ञ आएंगे



इंदौर। संस्था सेवा सुरभि के संस्थापक सदस्य, सामाजिक कार्यकर्ता और ख्यात लेखक कुमार सिद्धार्थ की पुस्तक प्रकृति का भविष्य, भविष्य का समाज का लोकार्पण रविवार 29 नवम्बर को दोपहर 4 बजे से टैगोर मार्ग स्थित म.भा. हिंदी साहित्य समिति के सभागृह में होगा। संस्था के संयोजक ओमप्रकाश नरेडा, वरिष्ठ अभिभाषक अनिल त्रिवेदी एवं पर्यावरणविद डॉ. ओपी जोशी ने बताया कि रेमन मेगसेसे पुरस्कार के अलंकृत, पानी वाले बाबा के नाम से प्रसिद्ध पर्यावरणविद राजेंद्र सिंह, शिक्षाविद और प्रख्यात वैज्ञानिक, एनर्जी स्वराज फाउंडेशन के संस्थापक प्रो. चेतन सोलंकी, पद्मश्री भालू मोंढे एवं पर्यावरण डाइजेस्ट पत्रिका के संपादक और प्रसिद्ध पर्यावरणविद डॉ. खुशाल सिंह पुरोहित के विशिष्ट आतिथ्य में इस पुस्तक का लोकार्पण होगा।

पुस्तक के लेखक कुमार सिद्धार्थ पर्यावरण एवं प्रकृति से जुड़े विषयों पर काफी लंबे समय से देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में सामयिक लेखन करते आ रहे हैं। उनकी नई पुस्तक में प्रकृति और समाज को लेकर अनेक दिलचस्प एवं महत्वपूर्ण पहलू व्यक्त किए गए हैं।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर स्मारक डाक टिकिट का विमोचन

इंदौर। भोपाल में धर्म और राष्ट्र गौरव का एक ऐतिहासिक क्षण साकार हुआ जब श्रमण संस्कृति महाश्रमण संत शिरोमणि समाधिस्थ आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महामुनिराज के सम्मान में भारत सरकार के भारतीय डाक विभाग द्वारा विशेष स्मारक डाक टिकिट का भव्य विमोचन समारोह श्री विद्योदय तीर्थ, हबीबगंज, भोपाल में सम्पन्न हुआ, ।



धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि यह समारोह आचार्य श्री के पट्टाधीश अभिनवाचार्य श्री 108 समय सागर जी महाराज के ससंघ मंगल सान्निध्य में आयोजित हुआ, जिसमें केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने स्मारक डाक टिकिट का लोकार्पण किया और मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

इस अवसर पर स्मारक डाक टिकिट के साथ विशेष मिनिएचर शीट, प्रथम दिवस आवरण, विशेष विवरणिका और विशिष्ट विरूपण मुहर भी जारी की गई, जिसमें आचार्य श्री के जीवन, त्याग, तपस्या, संयम, शिक्षा, स्वदेशी, हथकरघा, गौसंरक्षण, आत्मनिर्भरता और राष्ट्र निर्माण में दिए गए अतुलनीय योगदान को दर्शाया गया है।

समारोह में डाक विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, जनप्रतिनिधि, मंत्रीगण, सांसद, विधायक, प्रशासनिक अधिकारी और देशभर से पधारे हजारों श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित रहे।

श्री क्षत्रिय मेवाडा कुमावत समाज का सामूहिक विवाह समारोह

इंदौर । श्री श्री क्षत्रिय मेवाडा कुमावत समाज द्वारा सर्व ब्राह्मण सामूहिक विवाह समारोह 29 नवंबर को छोटा बांगड़दा रोड स्थित बाबा श्री गार्डन में आयोजित किया जा रहा है,इसमें 7 जोडे परिणय सूत्र में बंधेंगे।

संयोजक एडवोकेट कुमावत सतीश देवाल , अध्यक्ष कुमावत जीवन पालड़िया, कुमावत मनीष चोरमा,कुमावत राहुल रावरिया ने बताया कि समाज द्वारा सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस हेतु प्रविष्टि प्राप्त करने का सिलसिला जारी है,अभी तक 7 जोड़े की प्रविष्टि का रजिस्ट्रेशन हो चुका है। आयोजन में मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों एवं देश के अन्य राज्यों से भी प्रविष्टियां प्राप्त हुई है।

विवाह समारोह की शुरुआत 29 नवंबर को गणेश पूजन के साथ होगी, फिर मंडप होगा उसके बाद सभी जोड़ों की बारात बाबा श्री गार्डन से निकलकर विभिन्न स्थानों से होते हुए वापस आयोजन स्थल पहुंचेगी।

वरिष्ठ समाज सेवी अभय मोरवाल,दिलीप टीकोलिया,नरेंद्र पिलोदिया ने बताया कि विशाल पंडाल वंदनवारो से सजाया जाएगा। आकर्षक सज सज्जा के साथ बाहर से आने वाले आगंतुकों को ठहराने एवं भोजन की संपूर्ण व्यवस्था निशुल्क रहेगी।

ज्ञात-अज्ञात दिवंगतों की अस्थियों की मोक्ष यात्रा रविवार को

इंदौर, । ज्ञात-अज्ञात दिवंगतों की अस्थियों को शास्त्रोक्त विधि एवं परम्परा के अनुरूप देश की पवित्र नदियों में विसर्जित करने वाली संस्था श्रद्धा सुमन सेवा समिति द्वारा रविवार 29 नवम्बर को सुबह 9 बजे राजवाडा स्थित अहिल्या उद्यान पर अस्थि कलश पूजन के पश्चात ओंकारेश्वर के लिए मोक्ष यात्रा निकाली जाएगी।

समिति के अध्यक्ष हरि अग्रवाल, उपाध्यक्ष राजेंद्र सोनी, महामंत्री चेतन सेठिया एवं राजेंद्र गर्ग ने बताया कि पिछले 25 वर्षों से समिति द्वारा लगातार देश की पवित्र नदियों में उन ज्ञात-अज्ञात दिवंगतों की अस्थियों को एकत्र कर शास्त्रोक्त विधि से उनके पूजन के पश्चात उन्हें देश की पवित्र नदियों में विसर्जित करने का सेवा प्रकल्प चलाया जा रहा है। अब तक 25 हजार से अधिक दिवंगतों की अस्थियाँ समिति के संस्थापक अध्यक्ष ब्रह्मलीन मोहनलाल सोनी के मार्गदर्शन में देश की विभिन्न नदियों में प्रवाहित की जा चुकी है।

अब रविवार 29 नवम्बर को शहर के मुक्तिधामों पर रखी हुई अस्थियों को एकत्र कर उनका अस्थि कलश पूजन कर उन्हें ओंकारेश्वर के लिए बिदा किया जाएगा।

इस मोक्ष यात्रा, अस्थि कलश पूजन और पुष्पांजलि के दिव्य अनुष्ठान में अखंड धाम के महामंडलेश्वर डॉ. स्वामी चेतन स्वरुप, सदगुरु अण्णा महाराज, हंसदास मठ के महामंडलेश्वर पवनदास महाराज के सानिध्य में गायत्री परिवार के आचार्य विद्वानों के निर्देशन में मोक्ष यात्रा के पश्चात अस्थि कलश को ओंकारेश्वर के लिए बिदा किया जाएगा जहाँ ब्रह्मभोज एवं अन्य परम्परागत शास्त्रोक्त विधियों का पालन करते हुए अस्थियों को विसर्जित किया जाएगा।

ब्राह्मण सेवा संगठन की ओर से एमवाय के मरीजों के लिए 61 हजार की दवाईयाँ भेंट



इंदौर, । ब्राम्हण सेवा संगठन के सर्व समाज सेवा प्रकल्प, निरामय सेवा संजीवन द्वारा 31वीं बार एमवाय अस्पताल में भर्ती जरुरतमन्द मरीजों की सेवा के लिए करीब 61 हजार रु मूल्य की दवाईयाँ ÷सहायता÷ सीनियर सिटीजन रूप के माध्यम से भेंट की गई। संगठन के अध्यक्ष पं. सत्येन्द्र शर्मा एवं मीडिया प्रभारी पं. नीलाभ सुगंधी ने बताया कि इस अवसर पर संगठन के संरक्षक पं. अनुपम तिवारी, पं. राजेंद्र-ममता शर्मा, राजकुमार हेमनानी एवं पं. उमाकांत पटसारिया के सहयोग से उक्त सेवा कार्य किया गया। संगठन की सेवा गतिविधियों की सराहना करते हुए इस मौके पर अशोक चौरड़िया ने निशुल्क सेवा वाहन, चिकित्सा उपकरण केंद्र, डायलिसिस हेतु सहायता और सामूहिक विवाह में सहयोग जैसे प्रकल्पों का उल्लेख किया। कार्यक्रम में संगठन के पं. राजेंद्र शर्मा, पं. सरोज कौशिक, जितेन्द्र व्यास, मुकेश मामा, लक्ष्मीनारायण भार्गव, उमाशंकर पटसारिया, नरेन्द्र शर्मा, चेतन शर्मा, प्रतीक जोशी तथा मातृशक्ति की ओर से ममता शर्मा, आरती मिश्रा एवं ममता जोशी ने मेहमानों का स्वागत किया।